उन्हें पूरे उत्तर प्रदेश के संघ कार्य का दायित्व सौंपा गया। एक बार रेलयात्रा के दौरान एक अफसर उनकी सीट के सामने ही बैठा था। डिब्बे में बूट पॉलिश करने वाला एक लड़का चढ़ा।

ट्रेन रूकी। दीनदयाल उपाध्याय जिन्दाबाद के नारों के साथ स्वागत करता जनसमूह का दृश्य।

वे एक ईमानदार व्यक्तित्व के धनी थे। वे हमेशा तृतीय श्रेणी में ही रेलयात्रा करते थे। एक बार स्थान न मिलने के कारण कार्यकर्ताओं ने द्वितीय श्रेणी में ही उनका बिस्तर लगा दिया। सुबह टी.टी. आया।